ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 226-228

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में शिक्षक व परिवार की भूमिका

अमिता मिश्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर– विशेष शिक्षा दृष्टिबाधितार्थ विभाग, ज0 रा0 दि0 वि0, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-24.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: mishraamita.edu@gmail.com

सारांशः – *प्रत्येक बालिका के जन्म के बाद उसके माता पिता एवं परिवार अपने एक अहम भूमिका निभाता है। बालिका के माता पिता शिक्षित हो या अशिक्षित वे अपने नन्हें से जिगर के टुकड़ें के लालन पालन हेतु कोई भी कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। शिक्षित परिवार के लोग बालिका के विकास हेतु किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं उठाते हैं वहीं पर अशिक्षित परिवार के लोग धन अभाव के कारण बालिका के विकास हेतु पीछे नजर आते हैं। उनका मानना है कि जो भी होगा भगवान पर छोड़ देते हैं। यदि दृष्टिबाधित बालिका ने परिवार में जन्म लिया है, तो शिक्षित परिवार हो या अशिक्षित खुशी मनाने की जगह प्रत्येक व्यक्ति के मन में शोक व्याप्त हो जाता है कि हम ऐसे बालिका का क्या करेंगे, जो उजाले में आने के बाद भी अंधेरे में है अर्थात देख नहीं सकती, वहीं सामान्य बालिका के स्वास्थ्य खराब होने की वजह से या किसी दुर्घटना के कारण उसके आंखों की रोशनी चली गई है, तब भी परिवार में बालिका के प्रति शोक व्याप्त हो जाता है कि हम इस नन्ही सी बालिका को कहां ले जाएं और इस बालिका का क्या करें? वे माता–पिता होने के नाते अपने ह्रदय से लगाए रहते हैं और वहीं पर पास पड़ोस की प्रताड़ना भी सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति के घर में एक अंधी बालिका ने जन्म लिया है, यह तो उस व्यक्ति के पूर्व जन्मों के कर्मों का फल है कि उसके घर एक अंधी औलाद पैदा हुई है।*

कुंजीभूत शब्द– अशिक्षित, लालन पालन, शिक्षित परिवार, विकास,जोखिम, दृष्टिबाधित, स्वास्थ्य खराब, दुर्घटना।

बालिका के विकास को लेकर प्रत्येक परिवार चिंतित हो जाता है कि सामान्य बालिका धीरे–धीरे विकास के पथ पर जैसे–जैसे आगे कदम बढ़ाती है उसे माता–पिता के अलावा उसके नन्हें–मुन्नें दोस्त और परिवार के सदस्य उसके विकास में सहयोग करते हैं लेकिन अंधी बालिका के माता पिता के अलावा उसके नन्हें–मुन्नें दोस्त और परिवार के सदस्य अपनी कम भूमिका निभाते हैं।

सामान्य बालिका हो या दृष्टिबाधित बालिका शैशवावस्था से गुजरने के बाद जैसे ही बाल्यावस्था में कदम रखती है तो उसके स्कूल आने की बात आती है। माता–पिता एवं परिवार के लोग बालिका कैसी भी हो उसके विकास को लेकर विद्यालय का दरवाजा खटखटाते हैं। पर ज्यादातर अशिक्षित माता–पिता तथा परिवार के लोग दृष्टिबाधित बालिका को विद्यालय ले ही नहीं जाते हैं। दृष्टिबाधित बालिका के विकास में माता–पिता एवं परिवार के सदस्यों के बाद शिक्षक की अहम भूमिका होती है। बालिका के समय से शिक्षक के पास पहुंच जाने से उसका संज्ञानात्मक विकास तेजी से होने लगता है तथा जो बालिका शिक्षक के पास समय उपरांत पहुंचती है उसका संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ वृद्धि विकास भी कम होता है। जो शिक्षक बालिका की स्थिति को ध्यान में रखकर उसे शिक्षा देना आरंभ करते हैं यह ऐसे शिक्षक होते हैं जो दृष्टिबाधित बालिका को शिक्षा देने के लिए ही आर० सी० आई० के द्वारा मान्यता प्राप्त महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में दृष्टिबाधित बालिकाओं को पढ़ाने हेतु प्रशिक्षित होते हैं।

दृष्टिबाधित बालिका का विकास सामान्य बालिका की भांति नहीं हो सकता है। विशेष विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षक की सहायता से उसका थोड़ा–थोड़ा विकास हो जाता है, जिसके कारण वह सामान्य बालकों के बीच अपना समायोजन करने का प्रयास करती है यदि शिक्षक ने बालिका के विकास पर ध्यान दिया, तो उसके संज्ञानात्मक विकास, वृद्धि विकास, नैतिक विकास, धार्मिक विकास, साहित्यिक विकास, आर्थिक विकास, संवेगात्मक विकास, राजनीतिक विकास, नैतिक विकास, धार्मिक विकास के साथ–साथ राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत करना एक कुशल शिक्षक की अहम भूमिका को दर्शाता है और यह सिद्ध होता है कि शिक्षक के साथ–साथ उसके परिवार के सदस्यों ने भी अपनी पूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन किया है यदि दृष्टिबाधित बालिका का विकास किन्ही कारणों से अवरुद्ध होता है तो स्पष्ट है कि उसके परिवार के सदस्यों के साथ–साथ शिक्षक ने अपनी पूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं किया है जिसके कारण दृष्टिबाधित बालिका का विकास समय रहते नहीं हो सका है अर्थात दृष्टि बाधित बालिका के विकास में परिवार एवं शिक्षक की अहम भूमिका है।

उद्देश्य–

1. दृष्टिबाधित बालिका के विकास में शिक्षित एवं अशिक्षित परिवार की भूमिका का अध्ययन।
2. दृष्टिबाधित बालिका के विकास में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध अभिकल्प–

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

अ– शोध विधि प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें दृष्टिबाधित बालिकाएं जो शिक्षित परिवार एवं अशिक्षित परिवार, से संबंधित है इनसे साक्षात्कार द्वारा तथ्य एकत्रित किया गया है।

ब– न्यादर्श शोधार्थी ने 20 दृष्टिबाधित बालिकाओं का चयन रायबरेली के अंध विद्यालय से किया है।

तालिका संख्या-1. न्यादर्श की रूपरेखा

दृष्टिबाधित बालिका का परिवार	**संख्या**	प्रतिशत
शिक्षित परिवार वाले	6	30%
अशिक्षित परिवार वाले	14	70%

उपकरण– प्रस्तुत शोध में दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास को जानने के लिए प्रतिशत विधि को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या-2

शिक्षक	**संख्या**	**प्रतिशत**
प्रशिक्षित परिवार वाले	8	80%
अप्रशिक्षित	2	20%
योग	10	100%

दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास हेतु शोधार्थिनी ने 20 बालिकाओं को चिन्हित किया है शिक्षित एवं अशिक्षित परिवार के कितने सदस्य अपने बालिकाओं के विकास में सहयोग करते हैं उनका प्रतिशत 30 प्रतिशत और 70 प्रतिशत है तथा वहीं पर प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित अध्यापक जो दृष्टि बाधित बालिकाओं के विकास हेतु कार्य करते हैं। उनका प्रतिशत 80 प्रतिशत एवं 20 प्रतिशत है।

बालिका के विकास का प्रतिशतएवं शिक्षक के द्वारा विकास का प्रतिशत 80 प्रतिशत एवं 20 प्रतिशत है। दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में उनके परिवार का योगदान और शिक्षक की कितनी भूमिका है शोधार्थिनी ने में अपने शोध के माध्यम से पता लगाने का पूरा प्रयास किया है।

विश्लेषण और व्याख्या– प्रथम उद्देश्य प्राप्ति के लिए– दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में शिक्षित एवं अशिक्षित परिवार की भूमिका का अध्ययन– शोधार्थिनी ने दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास के लिए उनके परिवार की कितनी अहम भूमिका है यह जानने के लिए 20 दृष्टिबाधित बालिकाओं का चयन किया है जिससे शिक्षित परिवार वाले 6 दृष्टिबाधित बालिका अर्थात 30% तथा अशिक्षित परिवार वाले दृष्टिबाधित बालिकाओं की संख्या 14 अर्थात 70% है इससे परिवार की जागरूकता का पता चलता है कि जो परिवार शिक्षित है वह सामान्य बालिका की तरह दृष्टिबाधित बालिका के विकास मैं अपना पूरा सहयोग करते हैं।

द्वितीय उद्देश्य प्राप्ति के लिए– दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक की भूमिका का अध्ययन–

तालिका संख्या– 2– दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक के कितने अहम भूमिका है इसे पता लगाने के लिए शोधार्थी ने हर संभव प्रयास किया है दृष्टि बाधित बालकों की संख्या 20 है जिसमें 10 शिक्षण कार्य करते हैं जिनमें 8 शिक्षक प्रशिक्षित हैं अर्थात 80% योगदान करते हैं तथा 2 शिक्षक अप्रशिक्षित हैं अर्थात 20% का शिक्षण कार्य में दृष्टिबाधित बालिका के विकास में अपना योगदान कर पाते हैं।

परिणाम–

1. दृष्टिबाधित बालिका के विकास में शिक्षित परिवार की भूमिका अधिक होती है।
2. दृष्टिबाधित बालिका के विकास में अप्रशिक्षित परिवार की भूमिका बहुत कम होती है या फिर होती ही नहीं है।
3. प्रशिक्षित अध्यापक की भूमिका दृष्टिबाधित बालिका के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
4. प्रशिक्षित अध्यापक दृष्टिबाधित बालिका का विकास सामान्य बालिका की तरह करने में अधिक कुशल होता है।
5. दृष्टिबाधित बालिका के विकास में अप्रशिक्षित अध्यापक की भूमिका बहुत कम होती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

निष्कर्ष– उपरोक्त परिणाम का अवलोकन करने के बाद निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि दृष्टिबाधित बालिका के विकास में शिक्षित परिवार की भूमिका अधिक होती है तथा अशिक्षित परिवार की भूमिका बहुत कम होती है प्रशिक्षित शिक्षित परिवार के सदस्य दृष्टिबाधित बालिका का विकास एक सामान्य बालिका की तरह करना चाहते हैं जिससे उनकी बालिका किसी सामान्य बालिका से पीछे ना रह सके।

वहीं पर अशिक्षित परिवार के सदस्यों में अपनी बालिका के विकास को ईश्वरीय सत्ता के सहारे छोड़ देते हैं अज्ञानता बस उन्हें यह लगता है कि दृष्टिबाधित बालिका को पढ़ाने लिखाने से क्या लाभ है? जबकि सामान्य बालिका उनके लिए प्रत्येक कार्य कर सकती है।

शैक्षिक निहितार्थ– प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम से दृष्टिबाधित बालिका के विकास में शैक्षिक उद्देश्यों के निष्पादन में परिवार एवं शिक्षक अपनी प्रभावपूर्ण भूमिका को चरितार्थ कर रहे हैं पैतृक अभिभावक और सहोदर एवं शिक्षक दृष्टिबाधित बालिका के विकास के संदर्भ में निम्न बिंदुओं के माध्यम से अपनी भूमिका को और अधिक सार्थक बना सकते हैं–

1. दृष्टिबाधित बालिका या बालिका को समय पर विद्यालय में प्रवेश दिलावें।
2. परिवार के सभी सदस्य एवं शिक्षक दृष्टिबाधित बालिका का कदम कदम पर सहयोग करें और दृष्टिबाधित बालिकाओं के मध्य आदर्श आचरण प्रस्तुत करें।
3. दृष्टिबाधित बालिका की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयत्न करें तथा गृह का वातावरण शिक्षाप्रद बनाएं।
4. दृष्टिबाधित बालिकाओं के शैक्षिक निष्पत्ति को बढ़ाने के लिए उनको अभिप्रेरित करें।
5. दृष्टिबाधित बालिकाओं के विकास हेतु जीवन लक्ष्य के निष्पादन में शिक्षा के योगदान की सार्थकता को अशिक्षित परिवार को समझाएं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भार्गव, महेशः विशिष्ट बालक, वेदांत पब्लिकेशन, लखनऊ 2003.
2. वाजपेयी, एल०बी०: विशिष्ट बालिका, भारत बुक सेंटर, लखनऊ 2002 पृष्ठ–103.
3. अहुजा, एसः भारतीय रेल शिक्षक, नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड मुंबई, 1992 पृष्ठ–125.
4. एन०आई०सी०बी०: शिक्षक प्रशिक्षण लेख मात्रा, ऑल इंडिया कनफेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड रोहिणी, नई दिल्ली 2004 पृष्ठ–62.
5. जोसेफ, आर.एन. पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिशर्ष विकलांग समाकलन संस्थान करौंदी बी.एच.यू. वाराणसी 2015 पृष्ठ संख्या 214–215.

*****